Vol 5 Issue 3 Sept 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 3 | Sept - 2015

"महर्षि पत×जलि : एक योग प्रवर्तक के रूप में"

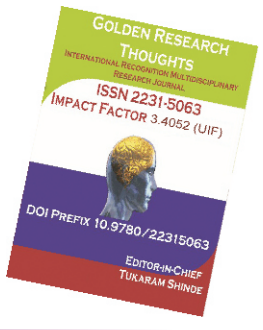

'धीरेन्द्र सिंह एवं जितेन्द्र कुमार शर्मा
'शोधार्थी, दर्शनशास्त्र, महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.)
एसोशियेट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.)

सारांश :

महर्षि पत×जलि को योग के आदि प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है। योग की विभिन्न धाराओं को मिलाकर इन्होंने एक महानदी का रूप दिया जिसके अन्दर योग की सभी पद्धतियों का समावेश हो जाता है। इनका विस्तृत चरित्र पत×जलि चरित्र तथा लघु मुनि त्रिकल्पतरू में प्राप्त होता है। ऋषियों के नामों के अन्तर्गत महर्षि पत×जलि का नाम अत्याधिक सम्मान के साथ लिया जाता है। व्याकरण के ग्रन्थों के अनुसार वे अपने पिता की अंजलि से अर्यदान करते समय दिव्य रूप से ऊर्ध्वलोक से आकर गिरे। इसी कारण इनका नाम पत×जलि पड़ा। यह इनके योग के प्रभाव का ही मूर्त रूप था। इनकी कृतियाँ यद्यपि अनेक हैं परन्तु योग दर्शन मुख्य है। यह योग का आधारभूत ग्रन्थ है।

मुख्य शब्द – महर्षि पत×जलि, योग प्रवर्तक एवं योग का प्रभाव।

प्रस्तावना :

योग दर्शन के सूत्रकाल से महर्षि पत×जलि की जीवनी का सुनिश्चित रूप में पता नहीं चलता। किन्तु यह बात निस्संदेह सिद्ध है कि महर्षि पत×जलि ने पाणिनि व्याकरण का महाभाष्य तथा वैद्यक की चरक संहिता, ये दोनों जो अपने–अपने विषय में अद्वितीय ग्रन्थ हैं इनकी के रचना हैं। जैसे कि कहा गया है कि–

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मनुीनां पत×जलि प्रा×जलिरानतोऽस्मि।।

अर्थात् महर्षि पत×जलि ने मनुष्य के चित्त की शुद्धि के लिए योगसूत्र की, वाणी की शुद्धि के लिए व्याकरण के ग्रन्थ अष्टाध्यायी तथा शरीर की शुद्धि के लिए चरक संहिता–इन तीन महाग्रन्थों की रचना की। इनमें व्याकरण महाभाष्य सबसे बड़ा ग्रन्थ है। ये ग्रन्थ ऐसे ग्रन्थ हैं जो अपने क्षेत्र में अद्वितीय है। इनके पश्चात् इनके क्षेत्र में जो भी कार्य हुआ वह सब इन्हीं को आधार मानकर किया गया है। यह सिद्ध करता है कि महर्षि पत×जलि एक सिद्ध योगी थे, जिन्होंने सभी पदार्थों का तात्विक रूप में साक्षात्कार किया और प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करते हुए उसको अपनी रचना में स्थान प्रदान किया। इनके योगसूत्रों पर स्वयं भगवान व्यास का भाष्य प्राप्त होता है। जो सांख्य प्रवचन भाष्य के नाम से जाना जाता है। परवर्ती टीकायें तो अनेक हैं जिनमें वाचस्पति मिश्र की तत्वैशारदी, विज्ञान भिक्षु का योग वार्तिक, शंकर का भाष्य विवरण, भिक्षु का योगसारसंग्रह, भोजराज का राजमर्तण्ड पद, सदाशिवेन्द्र का योग सुधाकर आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इन सभी ने महर्षि पत×जलि की योग परम्परा को आगे बढ़ाया है।

योगविद्या भारतीयों की विशिष्ट सम्पत्ति है। मानव जीवन की दैनन्दिन चर्या में योग का उपयोग महान् कल्याणकारी है। यह कार्य और चित्त के मलों को क्षालित कर आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करता है। संसार के घोर क्लेशांगारों में तप्तमानवों के लिए योगविद्या संजीवनी औषधि रस के समान शान्तिदायिनी है। इसका यत्किकंचित् अभ्यास भी अनर्थों के चक्रों से मुक्ति प्रदान करने में समर्थ है। आधुनिक विचारक इस तथ्य से पूर्णतया विज्ञ हो चुके हैं कि भौतिक प्रगति से सभी संसार में सुख और शान्ति नहीं आ सकती। विज्ञान की प्रगति की इस धारा को पीछे की ओर मोड़कर आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख करना होगा। अन्यथा यह जगत विध्वंस की विभीषका से अधिकाधिक आक्रांत होता जायेगा।

विश्लेषण – प्राचीन काल की मान्यताओं के अनुसार महर्षि पत×जलि को शेषनाग का अवतार मानकर काशी में एक बावड़ी पर पाणिनि मुनि के समक्ष सर्प रूप में प्रकट होना बतलाया गया है। पाणिनि मुनि घबराकर को भवान के स्थान पर कोर्भवान बोलते हैं। सर्प उत्तर देता है कि सपोऽहम्। पाणिनि पूछते हैं ''रेफः कुतो गतः' सर्प उत्तर देता है 'तब मुखे'। इसके पश्चात् सर्प के आदेशानुसार एक चादर की आड़ लगा दी गयी। उसके अन्दर से शेषनाग महर्षि पत×जलि अपने हजारों मुखों से एक साथ प्रश्नकर्त्ताओं के उत्तर देने लगे। इस प्रकार सारा महाभाष्य तैयार हो गया। किन्तु सर्प की यह आज्ञा थी कि कोई पुरुष चादर उठाकर अन्दर न देखे, एक व्यक्ति द्वारा उल्लघंन किये जाने पर शेषनाग की फंकार से ब्राह्मणों के सारे कागज जल गये। ब्राह्मणों की दुखी अवस्था को देखकर एक यक्ष ने जो वृक्ष पर बैठा पत्तों पर भाष्य को लिखता जाता था, वे पत्ते उनके पास फेंक दिये। उन पत्तों में से कुछ को बकरी खा गयी। इसलिए कुछ स्थानों में भाष्य में असंगति सी पायी जाती है।

''याराशर्प शिलालिभ्यां भिक्षुनट सूत्रयोः''(4/3/110)

अष्टाध्यायी के उपर्युक्त सूत्र में व्यास जी का पाणिनी मुनि से पूर्व होना सिद्ध होता है फिर भी पाणिनि मुनि अष्टाध्यायी पर महाभाष्यकर्ता पात×जल दर्शन के योगसूत्रकार पत×जलि किस प्रकार हो सकते हैं।

महर्षि पत×जलि के जीवन काल के संबंध में प्रस्तावित मत–जे.एच.वूड्स का मत–योग सूत्र के रचयिता महर्षि पत×जलि व्याकरण महाभाष्कार पत×जलि से भिन्न व्यक्ति थे। क्योंकि द्रव्य का लक्षण दोनों आचार्यों ने भिन्न–भिन्न दिया है। इनकी जन्मतिथि के संबंध में बहुत कुछ निश्चित न होने पर भी सूत्रों में विज्ञानवाद का खण्डन होने के कारण यह कहा जाता है कि ये वसुबंध के परवर्ती थे और इसी कारण पतंजलि से इनका बहुत बाद में होना निश्चित प्रायः है। इनका जीवन काल (300ई.–400ई.) के मध्य निश्चित किया जा सकता है।

क.योगसूत्र (3/14–15 तथा 4/14–21) में बौद्धों के निरालम्बन सम्प्रदाय का खण्ड किया गया है। यह सम्प्रदाय बौद्धों की विज्ञानवादी धारा का है, जो वसुबन्धु के द्वारा प्रतिष्ठापित किया है। यह सम्प्रदाय बौद्धों की विज्ञानवादी धारा का है, और वसुबंध का काल अधिकांश विद्वानों (एन.पेरी और एम. विन्टर्नित्ज) के द्वारा चौथी शताब्दी निश्चित किया गया है।
ख.वाचस्पति मिश्र भी पतंजलिकृत इस खण्डन को विज्ञानवादियों का ही खण्ड मानते हैं। अर्थ विज्ञानवादिनं वैनाशिकम् उत्थापयति।
ग.नागार्जुन के द्वारा अपने ग्रन्थों में योगसूत्रकार पतंजलि का उल्लेख कहीं भी नहीं किया गया है। इससे सिद्ध होता है कि योग सूत्रकार पतंजलि नागार्जुन के परवर्ती थे।
घ.अपने तत्वार्थाधिगमसूत्र (2/52) में जैन आचार्य उमास्वाती योगसूत्र (3/22) का उल्लंघन करते हैं। उमास्वाती छठी शताब्दी के पूर्व के हैं। अतः पतंजलि पांचवीं शताब्दी ई. के पूर्व के निश्चित रूप से सिद्ध होते हैं।
ङ.श्चेखात्सकी की सूचना के अनुसार दिडनाग (550 ई.पू.) पतंजलि का कोई उल्लेख नहीं करते, इससे भी योगसूत्रकार पतंजलि का महाभाष्कार पतंजलि से भिन्नत्व सिद्ध होता है।
च.माघ (7वीं शताब्दी) ने शिशुपालवध में योगसूत्र 1/3 का उल्लेख किया है।
छ.700 ई. के आसपास गौडपाद ने योगसूत्र 2/30, 32 और पतंजलि का भी उल्लेख सांख्यकारिका (23) के भाष्य में किया है।

बुड्स महोदय ने इन सब तथ्यों के आधार पर यह निश्चित किया है कि योगसूत्रकार पतंजलि महाभाष्यकार पतंजलि से सर्वथा भिन्न थे और उन्होंने चौथी या पांचवी शताब्दी में योगसूत्र की सिद्धि की थी।

डॉ. एस.एन.दास गुप्त आदि विद्वानों के अनुसार–डॉ.एस.एन.गुप्ता, ज्वाला प्रसाद रिचर्ड गार्वे महोदय, श्री बी.लाइविश और मरकिया एलियड आदि विद्वान प्रथम प्रकार के मतों का खण्डन अपने अपने ढंग से करते हुए एक प्राचीन भारतीय परम्परा के आधार योगसूत्रकार और महाभाष्यकार पतंजलि को एक ही व्यक्ति स्वीकार करते हैं। इस मत के अनुसार योगसूत्र का काल निश्चित रूप से दूसरी श.ई.पू. सिद्ध हो जाता है, क्योंकि महाभाष्य की रचना करने वाले पतंजलि शुंगवंशीय राजा पुष्यमित्र के समकालीन थे।

महर्षि पत×जलि ने संसार सागर से पार होने के लिए अपने योग सूत्र में तीन प्रकार साधनाओं का पूर्ण रूप से वर्णन किया है। चित्त वृत्ति निरोध के लिए महर्षि पत×जलि कहते हैं।

''अभ्यास वैराग्याभ्यां तन्निरोधः'' (यो.सू.–1/12)
अर्थात् अभ्यास और वैराग्य के द्वारा चित्त की वृत्तियों का निरोध होता है। इस अभ्यास और की साधना का वर्णन उन्होंने उत्तम कोटि के साधकों के लिए बताया है। साधकों के एक–दूसरे मार्ग का वर्णन करते हुए महर्षि पत×जलि कहते हैं–

''ईश्वर प्राणिधानाद्वा'' (यो.सू.–1/3)
अर्थात् जो उत्तम कोटि के साधक है, उन्हें केवल ईश्वर के प्रतिश्रद्धा भाव से भी योगसिद्धि हो जाती है। मध्यम कोटि के साधकों के लिए महर्षि पत×जलि क्रिया का वर्णन करते हुए कहते हैं–

''तपःस्वाध्याय ईश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः'' (यो.सू.–2/1)
इसके अभ्यास से भी चित्तवृत्तियों का निरोध सम्भव है। एक तीसरी साधना जो सामान्य पुरुषों और विद्वानों के लिए समान है। उसका वर्णन करते हुए महर्षि पत×जलि ने यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि अष्टांग का मार्ग बताया है, यही उनकी सर्व सामान्य साधना पद्धति है।

योगसूत्र महर्षि पत×जलि द्वारा लिखित एक ग्रन्थ है। जिसे योगदर्शन भी कहा जाता है, यह निम्नलिखित 4 अध्यायों में विभक्त है –

(1)समाधि पाद : इसके अंतर्गत 51 सूत्र आते हैं। इसमें निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डाला गया है। योग की परिभाषा, उद्देश्य, वृत्तियाँ, वृत्तिनिरोध के उपाय, सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात समाधि, अनुभवों के साधन, ईश्वर प्राणिधान, प्रणव जप, योग मार्ग की बाधायें, मन के सर्वांगीण विकास की सिद्धि तथा सबीज और निर्बीज समाधि।

(2)साधन पाद : इसके अन्तर्गत 55 सूत्र आते हैं जिनका निम्न उपायों से सम्बंध है–क्लेश, क्लेश निवृत्ति, क्लेश निवृत्ति का उद्देश्य, ज्ञाता और ज्ञात, सजगता और अभाव, महर्षि पतंजलि का अष्टांग योग, यम, नियम–निषेधात्मक विचारों की नियंत्रण की विधि यम नियम की पूर्णता तथा उनके परिणाम आसन प्राणायाम प्रत्याहार आदि।

(3)विभूति पाद : इस अध्याय में 55 सूत्र हैं जो निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डालते हैं। धारणा, ध्यान, समाधि, संयम, समाधि परिणाम (चेतना का रूपान्तरण), बाह्य दृश्य जगत् की उन्नति और सिद्धियाँ।

(4)कैवल्य पाद : इस अध्याय में 34 सूत्र हैं जो निम्नलिखित पर प्रकाश डालते हैं। सिद्धि प्राप्ति के साधन, व्यक्तित्व का कारण, व्यष्टि और समष्टि, मन व कर्म, व्याख्या और विचार, अन्य वस्तुओं में निहित एकता के दर्शन का सिद्धांत, कैवल्य मार्ग और कैवल्य।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि महर्षि पत×जलि एक योग प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं। योगासन और प्राणायाम का अभ्यास शारीरिक और मानसिक रोगों से मुक्ति प्रदान करता है। आधुनिक युग में योगाभ्यास उत्तम स्वास्थ्य के लिए महान उपयोगी सिद्ध हुआ है। योगाभ्यास की इस उपयोगिता के कारण देश–विदेश के विचारकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है। शारीरिक और आध्यात्मिक उन्नति के लाभार्थ आज अनेक योगाश्रम स्थापित किये जा चुके हैं। अतः योगदर्शन का शास्त्रीय महत्व ही नहीं अपितु यह एक व्यवहारिक दर्शन है। पाश्चात्य चिकित्सा वेदों और मनोवैज्ञानिकों ने अब आकर योग के महत्व को पहचाना है। जिस कारण आज पश्चिमी देशों में योग का प्रचार वृद्धि की ओर अग्रसर है।

संदर्भ –

1.योग दर्शन, विभूतिपाद 32
2.योग वाशिष्ठ 5/13/83
3.यो.व. सर्ग 81
4.वलियम वॉन हरबोल्ट
5.वाराह पुराण
6.गीता (3:29)
7.जगदीश चन्द्र मिश्र भारतीय दर्शन
8.कठोपनिषद् 1/2/16
9.ऐतरेय ब्रा. पू. 3/6
10.जतज्ञानेश्वरी गीता 211/292
11.योगदर्शन, 1/27

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org